IIJ Impact Factor : 3.119 ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 6 Vol. 12, Part-I July-December, 2020

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor-in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur-Bihar

भोजपुरी भाषी जनसंख्या का प्रवासन

अजीत कुमार सिंह* व डॉ0 नरेन्द्र सिंह**

भोजपुरी भाषी प्रवासन शिक्षित और प्रतिभाशाली व्यक्तियों के लिए अपना देश छोड़कर बेहतर सुविधा के लिए दूसरे देश जाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द प्रतिभा का प्रशासन अधिक शिक्षित और प्रतिभाशाली व्यक्तियों या गरीब व्यक्तियों द्वारा बेहतर रोजगार के लिए देश छोड़ने के लिए वर्णन करता है। यह मुख्य रूप से किसी देश के अंदर बेहतर रोजगार के अवसरों की कमी को दर्शाता है। प्रतिभा पलायन किसी देश की अनुभवी और प्रतिभाशाली लोगों के बड़े पैमाने पर प्रस्थान के लिए संदर्भित करता है। यह उनके मूल स्थान के लिए एक बड़ी समस्या का कारण बनता है क्योंकि इससे प्रतिभा का नुकसान होता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। विभिन्न कारकों के कारण दुनिया भर के कई देश इस गंभीर मुद्दे से जूझ रहे हैं।

यहां U.K. जैसे देशों ने भी बड़ी प्रतिभा का पलायन का अनुभव किया है वहीं भारत और चीन जैसे विकसित देशों में यह घटना आम बात है। ऐसे कई कारण है जो इन देशों में प्रतिभा प्रवासन के लिए जिम्मेदार है। उच्च वेतन बेहतर चिकित्सा सुविधा उन्नत प्रौद्योगिकी तक पहुँच बेहतर मानक और अधिक स्थित राजनीतिक परिस्थितियाँ कुछ ऐसी है जो भोजपुरी भाषी प्रतिभाओं को आकर्षित करते हैं।

प्रतिभा प्रवासन के प्रकार : a) भौगोलिक प्रतिभा प्रवासन, b) संगठनात्मक प्रतिभा प्रवासन, c) औद्योगिक प्रतिभा प्रवासन, d) कृषि गत प्रतिभा का प्रवासन।

प्रतिभा प्रवासन के लिए जिम्मेदार कारकों को स्पष्ट रूप से पहचान लिया गया है ज़ो कुछ भी करने की जरूरत है वह इस मुद्दे पर काबू पाने के लिए इन्हें नियंत्रित करना है। अन्य बातों के अलावा बाजार में बेहतर रोजगार के अवसरों को पैदा करने एक व्यक्ति के कौशल के बराबर वेतन पैकेज की पेशकश करने एवं इस मुद्दे से बचने के लिए एक स्वस्थ कार्य वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

प्रतिभा प्रवासन को नियंत्रित करने की तरीके : प्रतिभा का प्रभाव से जो भौगोलिक स्तर पर हो रहा है उसे निपटना भी मुश्किल है इस समस्या से निपटने के लिए निम्न उपाय हैं।

a) आरक्षण प्रथा बंद हो, b) मेरिट एकमात्र फैसले की जरिया बने, c) उचित प्रचार, d) नेतृत्व में सुधार, e) वेतन पैकेज।

भोजपुरी भाषी प्रतिभा का प्रवासन की समस्याओं को नियंत्रित करने के लिए सरकार को जन उपयोगी योजनाओं को चलाना होगा।

भोजपुरी प्रतिभा का वैश्विक परिवेश : भोजपुरी भाषा शब्द का निर्माण बिहार का जिला भोजपुर के आधार पर पड़ा भोजपुरी एक आर्य भाषा है यह मुख्य रूप से प0 बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में बोली जाती है भोजपुरी हिंदी की एक उप भाषा है। वर्तमान समय में भोजपुरी को ग्लोबल भाषा बनाने का प्रयास जोरों पर चल रहा है।

भोजपुरी जानने समझने वालों का विस्तार विश्व के सभी महाद्वीपों पर है जिसका कारण ब्रिटिश राज के दौरान उत्तर भारत से अंग्रेजों द्वारा ले जाए गए मजदूर है जिन के वंशज अब जहां उनके पूर्वज गए थे वहीं बस गए हैं इसमें सुरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबैको, फिजी मॉरिशस आदि प्रमुख देश है। 2001 के जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 3.3 करोड़ लोग भोजपुरी बोलते हैं पूरे विश्व में भोजपुरी जानने वालों की संख्या 4 करोड़ है।

भोजपुरी जन एवं साहित्य : भोजपुरी बहुत ही सुंदर, सरल तथा मधुर भाषा है। अनेक पत्र पत्रिकाएँ तथा ग्रंथ भोजपुरी में प्रकाशित हो रहे हैं तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन होते रहे हैं। विश्व भोजपुरी

*शोधछात्र, भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
**शोध निदेशक, विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

ISSN No. - 2320-351X

PATLIPUTRA JOURNAL OF INDOLOGY

Half-yearly Refereed Research Journal

Vol. - 12 : : Issue : 5 :: January, 2019

Editor in Chief :
Prof. Deepak Kumar

PCIR
PATLIPUTRA CENTRE FOR INDOLOGICAL RESEARCH
PATNA

www.patliputrajournal.com.
Journal No. 41629 in U.G.C. Approved Journal list.

कृषि जैव विविधता पर जनसंख्या का बढता प्रभाव

डॉ नरेन्द्र सिंह
शोध निदेशक, भूगोल विभाग
विभागाअध्यक्ष,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

अजीत कुमार सिंह
शोधार्थी, भूगोल विभाग
वीर कुंवर सिंह विष्वविद्यालय, आरा

विकास की अंधाधुंध दौड़ में प्रकृति का जितना शोषण मानव ने किया है, हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या ने किया है उतना किसी ने नहीं किया। कृषि जैव विविधता का एक महत्वपूर्ण उच–समुच्चय है। कृषि जैव विविधता पर्यावरण, आनुवंशिक संसाधनों, प्रबंधन प्रणालियों और सांस्कृतिक रूप से विविध लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रथाओं के बीच का परिणाम है। जैव विविधता कृषि का आधार है। कृषि जैव विविधता फसलों वनस्पतियों की सभी प्रजातियों और अनके भीतर की विविधता का मूल है। हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। सदियों से मानव सभ्यतायें कृषि को महत्वपूर्ण स्थान देती आ रही है। प्रकृति के साथ कृषि का संबंध बहुत पुराना विश्व स्तर पर आधुनिक कृषि को अपनाये जाने के बाद हमारी कृषि जैव सम्पदा जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरण एवं परिस्थितियों को काफी हद तक नुकसान पहँचा है। बढ़ती हुई जनसंख्या का भोजन उपलब्ध कराने हेतु हरित क्रांति के माध्यम से खेतों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग अधिक से अधिक मात्रा में किया जाने लगा है। इसके साथ ही साथ फसलों में रोग एवं कीट नियंत्रण रेतु जहरीले रसायनों का प्रयोग बढ़ता चला गया जिसके परिणाम स्परूप रायायनिक तत्वों के अवशेष भूमि, जल एवं वायु को प्रत्यक्ष रूप से तथा मनुष्य के जीवन को फसलों के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

जनसंख्या दबाव एवं आधुनिक कृषि के दुष्परिणाम

खेतों में आधुनिक संससाधनों के प्रयोग से कृषक धीरे–धीरे बाजार पर निर्भर होता जा रहा है। किसान खेती के लिए बीजों, रासायनिक खादों एवं रोग व कीट नियंत्रण हेतु पुरी तरह बाजार पर निर्भर हो गया है। खेती में अधिक लागत खर्च होने की वजह से किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है। रासायनिक खाद एवं कीट नाशकों के अधिक प्रयोग से न केवल खेती में न केवल उत्पादन खर्च बढ़ता जाता है बल्कि रासायनिक खादों से धीरे धीरे खेत की उर्वरा शक्ति में कमी आ जाती है तथा कीटनाशकों का कीडो व रोगो पर भी असर कम होता है।

हमारे देश में कुल 170 कीटनाशक कम्पनियाँ पंजीकृत है। जिनमें से 64: कीटनाशको का खेती में प्रयोग होता है रसायनों के अधिक प्रयोग से पर्यावरणीय संतुलन दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है। जमीन की उर्वर शक्ति घटती

शब्दार्णव

Shabdarnav

An International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year-6 **Vol. 12, Part-III** **July-December, 2020**

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
Dr. Kumar Mritunjay Rakesh
Mr. Raghwendra Pandey

Published by
Samnvay Foundation
Mujaffarpur, Bihar

भोजपुर जिला में जनसंख्या का बदलता स्वरूप

अजीत कुमार सिंह*

साक्षरता एक ऐसा व्यक्तिगत गुण है जो किसी को पढ़ने एवं लिखने की योग्यता को उजागर करती है। साक्षरता मानव के सोच विचार तथा कर्म करने की योग्यता में वृद्धि करती है और उसे किसी नई खोज की दिशा में प्रोन्नति करती है। जिनसे समाजिक–संस्कृति एवं आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, निर्धनता एवं सामाजिक भेद–भाव को दूर करने में साक्षरता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आज के वैज्ञानिक युग में साक्षरता का महत्व इसलिए भी है कि निरक्षर है या अनपढ़ व्यक्ति समाज एवं देश की वर्तमान वास्तविक स्थिति तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने में सक्षम नहीं होता है। मानव सभ्यता का विकास प्रत्यक्ष रूप से साक्षरता का ही परिणाम है आज दुनिया का कोई भी देश जो आर्थिक रूप से संपन्न है वहाँ साक्षरता दर उच्च है जिस देश का साक्षरता दर निम्न है वो देश जो पिछड़ा हुआ है। साक्षरता का प्रभाव जन्म दर, मृत्यु दर, व्यवसाय संरचना प्रवास, नगरीकरण आदि पर पड़ता है। अतः जनसंख्या की विशेषताओं एवं जनांकिकीय लक्षणों की क्षेत्रीय भिन्नता के अध्ययन के लिए साक्षरता का विश्लेषण भूगोल के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। साक्षरता का शाब्दिक अर्थ है किसी व्यक्ति के साक्षर अक्षर युक्त होने के गुण।

हमारे देश में साक्षरता को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि सात वर्ष और उससे अधिक आयु का जो व्यक्ति किसी भाषा को समझ सकता हो और उसे लिख तथा पढ़ सकता हो वह साक्षर की श्रेणी में आएगा।

कुछ देशों में उन व्यक्तियों को साक्षर माना जाता है जो व्यक्ति निर्धारित प्रश्नों के सही सही उत्तर दे सकता हो। इसके अंतर्गत फिनलैंड देश को सम्मिलित किया गया है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की जनसंख्या आयोग के द्वारा प्रस्तावित मापदंडों के अनुसार उन सभी को साक्षर माना जाता है जो व्यक्ति किसी एक भाषा में साधारण सूचना को पढ़ लिख एवं समझ सकता हो।

साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक :

साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित कारक है –

1. आर्थिक कारक : किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास के स्तर में जैसे–जैसे उत्पन्न होता है सामान्तः साक्षरता दर में वृद्धि होती जाती है। साक्षरता दर अर्थव्यवस्था के प्रकार पर भी निर्भर करता है अर्थात जिस क्षेत्र में कृषि प्रधान रोजगार हो वहाँ साक्षरता दर कम और जहाँ द्वितीयक, तृतीयक कार्यों की प्रमुखता होती है वहाँ साक्षरता दर उच्च होता है।

2. सामाजिक कारण : किसी भी समाज में वहाँ की चली आ रही परंपराओं, मान्यताओं आदि का साक्षरता के निर्धारण में विशेष योगदान होता है। समाज में हम स्त्रियों को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि पुरुष प्रधान देश में शिक्षा के विकास में महिलाओं को कम महत्व दिया जाता है। जिससे उनका स्तर निम्न प्रकार का होता है। हमारा समाज विभिन्न जातियों, विभिन्न धर्मों में बटी है जो साक्षरता को भी प्रभावित करती है। किसी क्षेत्र में विद्यालय की उपस्थिति साक्षरता दर को प्रभावित करती है।

3. राजनीतिक कारण : साक्षरता और शिक्षा के उन्नयन के लिए किसी क्षेत्र की सरकारी नीतियाँ भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। 1950 के दशक में लगभग अधिकांश देश विदेशी राष्ट्रों का उपनिवेश था और उस समय के उपनिदेशक राष्ट्रों ने वहाँ के नागरिकों के सामाजिक तथा शैक्षिक विकास पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जिसके कारण वहाँ की जनसंख्या निरक्षर बनी रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने शैक्षिक विकास को जन–आंदोलन करके साक्षरता के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया।

4. जनांकिकीय कारण : नगरों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों की बहुलता होती है जिसके संचालन के लिए सामान्यतः शिक्षित एवं कुशल व्यक्तियों की जरूरत होती है। अर्थात नगरवासियों में शिक्षा के समक्ष जागरूकता एवं तत्परता अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। विभिन्न क्षेत्रों की साक्षरता के

ISSN 0972-5636

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 39 अंक 1 जुलाई 2018

उत्तर प्रदेश के ग़ाज़ीपुर ज़िले में स्थित प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन

राजेश कुमार श्रीवास्तव*

प्राथमिक शिक्षा को 1 अप्रैल 2010 से अनिवार्य व निःशुल्क कर दिया गया तथा बेसिक शिक्षा (6–14 वर्ष तक के बालकों को शिक्षा) का दायित्व सरकार को दे दिया गया। लेकिन सरकार, समाज व शिक्षकों की उदासीनता के चलते इस दिशा में ठोस प्रगति नहीं कर पा रही है। आज पर्याप्त विद्यालय खुल जाने के बावजूद तथा सर्व शिक्षा अभियान के तहत अध्यापकों, शिक्षा मित्रों, शिक्षा प्रेरकों एवं अनुदेशकों की नियुक्ति के बाद भी प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति होती दिखाई नहीं दे रही है। निजी स्कूल में विद्यार्थी फ़ीस जमा करते हैं, इसलिए निजी प्रबन्धन विद्यार्थियों को 'उत्पादक' मानता है और इनके विकास के लिए सभी सार्थक कदम उठाने से भी नहीं चूकता है। प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था विशेषकर उत्तर प्रदेश के ग़ाज़ीपुर ज़िले में स्थित प्राथमिक स्कूल की शिक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन शोधक द्वारा वर्ष 2016 में किया गया जिसमें ज़िले के सात ब्लॉक के 26 विद्यालयों में जाकर मात्रात्मक एवं गुणात्मक आँकड़े एकत्र किए गए। साथ ही, समाचार-पत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण कर ग़ाज़ीपुर ज़िले की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था पर गंभीरतापूर्वक चर्चा की गई है जिसे आप इस शोध पत्र में विस्तृत रूप में पढ़ेंगे।

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा स्तर कहा जाता है। बालक-बालिका की आयु 6 या 7 वर्ष होने पर उसकी प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ होती है तथा साधारणतः 14 वर्ष की आयु होने तक चलती है। प्राथमिक शिक्षा स्तर पर बालक-बालिका किसी शिक्षा संस्था में नियमित ढंग से औपचारिक विद्याध्ययन करना प्रारम्भ कर देते हैं। अतः कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा जा सकता है। शिक्षा आयोग (1964–66) ने कक्षा 1 से कक्षा 5 तक की शिक्षा को निम्न प्राथमिक शिक्षा तथा कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहा है। अतः निम्न प्राथमिक शिक्षा सामान्यतः 6 से 11 वर्ष के आयु वर्ग के बालकों के लिए होती है, जबकि उच्च प्राथमिक शिक्षा प्रायः 11 से 14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए होती है।

अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का विचार वस्तुतः मानवतावादी प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था की

*प्राध्यापक, (बी.एड. संकाय) टी.एन. अग्रवाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हीगाँव, आरा, बिहार – 802301